

Kshama Ki Shakti Ka Mahatva

Date : 20th January 1975
Place : Mumbai
Type : Seminar & Meeting
Speech : Hindi
Language

CONTENTS

I Transcript

Hindi	02 - 10
English	-
Marathi	-

II Translation

English	11 - 16
Hindi	-
Marathi	-

ORIGINAL TRANSCRIPT

HINDI TALK

Scanned from Hindi Chaitanya Lahari

कलयुग में क्षमा के सिवाए और कोई भी बड़ा साधन नहीं है। और जितनी क्षमा की शक्ति होगी उतने ही आप शक्ति शाली होंगे। सबको क्षमा कर दें। क्षमा वही कर सकता है जो बड़ा होता है। छोटा आदमी क्या क्षमा करेगा? आज मैंने सवेरे कहा था कि धर्म को जानें, आपके अन्दर जो धर्म है उसको जानें। धर्म में खड़े हैं, जो आदमी धर्म में खड़ा है उसकी कितनी शक्ति होती है! तो धर्म को जानें। हाँ कितना सुन्दर हम धर्म में खड़े हैं, जो अधर्म में खड़ा है वह तो अधर्मी है। उसका हमारा कोई मुकाबला नहीं है। वह तो अधर्म में खड़ा है। हम तो धर्म में खड़े हुए हैं, हमारा तरीका ही और है। जो धर्म में खड़ा है उसका तरीका ही और होता है, जो अधर्म में होता है उसका कुछ और होता है। धर्मवाले से अधर्म वाले का मेल जोड़ हो नहीं सकता। हमें यहाँ तकलीफें हो रही हैं, परेशानी हो रही है लेकिन हम तो अपने धर्म पर खड़े हुए हैं न। यह सबसे बड़ी बात है। अपनी शक्ति को अन्दर जानो जो सिर्फ धर्म स्वरूप है। और धर्म कुछ नहीं सिर्फ प्रेम है और जब प्रेम ही सब कुछ है तो क्षमा उसका एक अंग है। कितना कौन जुल्म कर सकता है, देखते हैं हमारे प्रेम के आगे। कितना कौन दुष्टता कर सकता है, कौन कितना घर का भेदी होगा, कौन कितनी तकलीफें देगा, कौन कितना परेशान करेगा, करने दो। प्यार के आगे सब चीज़ झुक जाती है। यही एक तरीका है जो कलयुग में बैठता है। और तो मेरी समझ में कुछ नहीं आता। अगर आप सोचते हो कोई पुराने तरीके आप इस्तेमाल कर सकते हो तो यह हो नहीं सकता। इसका एक कारण है आप लोग जान लीजिए, मैंने पहले भी बताया और मैं फिर बता रही हूँ, कि पूर्णतया साधु और पूर्णतया सन्त संसार में नहीं है। हर एक सन्त साधुओं में भी एक एक

राक्षस है। आपके चित्त में घुसे हुए हैं। बात समझ में आई? अगर कोई साधु ही सिर्फ हो तो ठीक है। 'परित्राणाय साधुनां विनाशाय च दुष्क ताम्'। साधु के साथ एक दुष्ट बैठा हुआ है तो बहुत ही प्रेम से अलग हटाना पड़ेगा कि नहीं? कितना कठिन काम है? आप साधुता में खड़े हैं या आप दुष्टता में खड़े हैं यह आप पर निर्भर करता है। अगर आप साधुता में खड़े हैं और कोई दुष्टता चिपक रही है तो उसको हटा सकते हैं। लेकिन आज ऐसे शुद्ध जीव कितने हैं संसार में बताईए। Degree का फर्क है और जो लोग सधुता की ओर जा रहे हैं वे लोग साधुता को बटोरें। उनको उन लोगों से मतलब नहीं रखना चाहिए जो असाधु हैं। जो असाधु हैं, जो चोर हैं, बिलन्दर हैं, उनका हमसे क्या मुकाबला? वे चोर ही हैं और हम वो नहीं हो सकते, वे यह नहीं हो सकते। हमसे उनका कोई मुकाबला है? यह हो ही नहीं सकता। वह तो दूसरी line पर चल रहा है, हम तो दूसरी line पर चल रहे हैं। पर धर्म में ही जागना सहजयोग का लक्षण है और कोई लक्षण नहीं है सहजयोग का। सीधा हिसाब किताब है। सहजयोग का इन सब चीज़ों से बिल्कुल भी सम्बन्ध नहीं है। अपने धर्म में जागना है, अपने प्रकाश को पाना है। अपने को जानना है। कोई कहता है माताजी क्या करें। चक्रों को ऐसा चढ़ाएँ। अंगुली ऐसे घुमाएँ कि वैसा करें। सारे यह घुमाने फिराने में आदीगतियाँ primordial movements हैं। यह सारे जो मैं आपको बता रही हूँ, primordial जो बनाई गई। लेकिन उसका अर्थ तभी होगा कि शुद्ध तरह से चीज़ का प्रवाह होना। अन्दर से अगर mixed चीज़ प्रवाहित है तो जब आप हाथ घुमाते हैं तो उसमें थोड़ा mixed ही घूम रहा है। क्षमा के सिवाय शुद्धता अन्दर नहीं आती और जब शुद्धता आएगी तो प्रकाश धर्म का फैलेगा, शुद्ध निर्मल।

अतः जिसके पास धर्म है उसको प्रकाश में आना होगा, बोलना होगा, बताना होगा। लेकिन उसके हर व्यवहार में खुद उसको सोचना चाहिए कि धर्म दिखाई दे रहा है कि अधर्म दिखाई दे रहा है। इससे पहले, अगर realization से पहले आपको यह Lecture देती तो बहुत गलत काम हो जाता है क्योंकि conditioning होता है। और यही बात है कि सारे psychologist ने धर्म को खत्म कर दिया और बता दिया कि जितने भी धर्म है, यह सिखाते हैं कि यह नहीं करो, वह नहीं करो। इससे conditioning mind की होती है। ठीक बात है। लेकिन अब यह नहीं होने वाला है। अब आप जो भी चाहे अपने मन से कर सकते हैं। There will be no conditioning at all. क्योंकि ego और super-ego के बीच में आपका चित्त लाकर खड़ा कर दिया है, धर्म खुद ही उठ रहा है। आप नहीं उठा रहे। उसका मार्ग आप ने चुना है और जो भी लौकिक जाना है आप ने, जो भी लौकिक जाना है, संसार में ऐसा वैसा है उससे आप अलौकिक को तोल नहीं सकते। अलौकिक का मूल्य उससे आप नहीं जोड़ सकते। अलौकिक की बात मैं कर रही हूँ। आप लोग लौकिकता से उसको देख रहे हैं। लौकिकता के तीन dimensions खत्म हो गये। चौथे dimension में जिसको दूढ़ना है, गहराई से, गम्भीरता से, चौथे dimension में चलने की बातचीत मैं कर रही हूँ। लौकिक चीजों से आप अलौकिक चीजों का मूल्यांकन नहीं कर सकते। क्या सताया लोगों ने? कुछ भी नहीं सताया। हम तो कहते हैं कि हम तो बिल्कुल आराम से हैं। जैसे हमने अपनी तकलीफें देखी हैं, जैसे जैसे लोग हमने देखे हैं कि उनके लिए जोड़े से गालियाँ नहीं मिलेंगी, आपको जोड़े से उनका वर्णन नहीं मिलेगा। ऐसे ऐसे महादुष्ट थे। लेकिन समाज की स्थिति बहुत

अच्छी है आज। आपकी भी स्थिति बहुत अच्छी है। लेकिन अपने ही साथ छल कपट नहीं करो। अपने ही साथ छल कपट नहीं करो। सीधा हिसाब है। सहजयोग के साथ आप जो भी कर रहे हैं वे आप अपने ही साथ कर रहे हैं। हिसाब यह जोड़ लीजिए। हाँ अब यह प्रश्न बहुत बार हो जाता है Adminstration में ऐसा प्रश्न होता है कि क्या करें? यह ठीक है कि नहीं, और इतना आसान कि, इतना आसान है कि कोई भी decision लेने से पहले निर्विचारिता में जाओ। अपने आप जो decision सामने आ जाए वह करिये। कभी गलत हो ही नहीं सकता। पर decision निर्विचारिता में Spontaneous होगा और विचार में अगर आप ने कर लिए तो वह biased होगा। क्योंकि उसमें आपका ego और superego दोनों काम करते हैं। आपका जो कुछ भी संसार है, आपने जो कुछ भी लौकिक कमाया है वह आपके पीछे में खड़ा रहेगा। लेकिन निर्विचारिता में करियेगा तो कभी न होगा, अलौकिक होगा, चमत्कारी होगा। चमत्कारी होगा क्योंकि हिन्दी में चमत्कारी का अर्थ होता है बड़ा ऊँचा और मराठी में होता है चमत्कारी का अजीब। एक चमत्कारी होगा मराठी वाला और एक होगा हिन्दी वाला। जब बात अलौकिकता की हो रही है तो लौकिकता के जितने भी आपके बने हुए मत हैं, preconceived ideas of human beings cannot be God. He has his own standing, his own being. आप लोग चाहेंगे कि भगवान हमारे जैसा हो जाए। यह तो वही चीज हो गई कि भगवान दो चार रुपए दे दो, उधर मैं लगा देता हूँ आपका। वह एक level हो जाएगा। वह अपना जैसे है प्रकाशित करेगा, आप अपने मार्ग को खोलते जाइए। अपने धर्म को अपने अन्दर जानिए। अपने धर्म को जानना बहुत ज़रूरी है। कितनी सुन्दर चीज़ है अन्दर में। इस नश्वर देह के

अन्दर कितनी अनश्वर चीज बह रही है। जैसे कि गंगा, यमुना और सरस्वती, तीनों के संगम की यह धारा है। इसलिए जो मिटने वाला है, जो लौकिक है उससे इस चीज़ को नहीं जान सकते। एक क्षण निर्विचारिता में जाकर के आप किसी भी चीज़ का decision ले लें। आप ऐसे decision लेंगे कि बड़े-बड़े लोगों के बस का नहीं, dynamic, absolutely dynamic। जब चिन्ता, भय क्रोध, servility, slavishness, inferiority, सारे complexes झड़ झुड़ करके, वो तो अपनी शान में बोलेगा न अन्दर। और उँसकी अपनी नम्रता है, वह इतना म दु है, इतना म दु है कि किस तरह से अन्दर चला जाता है कि पता ही नहीं चलता। जैसे झर के चाँदनी अन्दर उतर आई हो।

और जब आप चुने गए हैं तो आपका महत्व बहुत ज्यादा है। आप सोचते हैं कि हम तो ordinary आदमी हैं हम कैसे चुने गए? ordinary आदमियों में से ही चुने जाएंगे और यह जितने भी extraordinary आदमी आपको दुनिया में दिखाई देते हैं कि यह बड़े बड़े पदभूषित हैं, यह सब missing link हो जाएंगे कल। हमेशा ऐसा हुआ। Evolution की हर एक stage में ऐसा ही हुआ है अगर आप देखें। जो बहुत ऊँचे mammoth हुए हैं जो बहुत physically developed हुए हैं खत्म हो चुके। They are missing links। हाथी उनमें से बच गए, जो बीच के थे। इसी तरह जो mentally बहुत developed हुए उनमें से कह सकते हैं कि fox वह missing link में गया और उससे बढ़कर कुछ लोग हैं। लेकिन उसमें से कुत्ता बच गया, कुत्ता बच गया। इसी तरह मनुष्य में जो साधारण में से ही उठेगा। हमेशा उठता रहा साधारण में से और so called असाधारण हैं three dimension में, वह कुछ नहीं करने वाले। वे missing link हो

जाएंगे, evolution stage में जैसे chimpanze को लोग जानते हैं कि वह missing link था। Evolution में वही लोग साधारण में से चुने जाएंगे। बहुत ही normal होना चाहिए। जो बड़े बड़े दण्डे सन्यासी बने घूम रहे हैं ये कही भी नहीं पहुँचने वाले। आप देख लीजिए। सब missing link हो जाने वाले हैं और जो बड़े बड़े पदभूषित हैं वे भी कहीं नहीं पहुँचने वाले। कितनों को Realization दिया हमने, राजे महाराजे, secretaries, सब अपने पद पर बैठे हुए हैं। किसी को लगता है कुछ कि हमारे अन्दर दीप कहीं जला? चिट्ठियाँ मुझे लिखते हैं मुझे बड़ा आनन्द आ रहा है। कोई कुछ करने की सोचता है कि हमने लिया, किसी और को भी बाँटें। अपना विशेष स्थान जब होता है तो अपने को भी विशेष होना पड़ता है। इसी साधारण सामान्य में से ही असामान्य निकलने वाला है। वही निखरने वाला है। धीरे-धीरे आपकी सब समझ आ जाएगा कि यह महामूर्ख है इनसे कौन बात करे। हैं बड़े भारी डॉक्टर, क्या करा जाए? महामूर्ख हैं; अपने को क्या करना है? ज़िन्दगी बिता दी इन्होंने कुछ नहीं किया सब चूल्हे में गया, अपने को क्या करना। अपना स्थान बहुत ऊँचा है। और इस चीज़ का कोई education नहीं हो सकता। आपका कोई education नहीं हो सकता कि मैं आप को बैठकर के educate करूँ। ABCD सिखाऊँ। यह रोज अनुभव से आपको देखना पड़ता है।

आज सवेरे मैंने बहुत पते की बात बताई कि सहजयोग में आप समष्टि में हैं। व्यक्ति में नहीं हैं, आप समष्टि में हैं। यह point आप जान लीजिए। अब गगनगढ़ महाराज हैं बहुत बड़े हैं। आप लोगों से बहुत बड़े, बहुत ऊँचे हैं मान लिया। 21 हजार वर्ष झकमारी उन्होंने, खुद कहा उन्होंने। 21 हजार बार जन्म लिया और परमात्मा के चरणों में गिरे रहे

और जंगलों में रहे तब जाकर ये vibrations मिले उनको और आज तुमको खट से क्यों मिल गए भई? क्योंकि यह एक नया संसार है, एक नई बात है। यह विराट के शरीर के रोम-रोम आप लोग हो गए हैं। यह एक symbolic आदमी बना दिया। हो गया। उनकी बात भूलिए। आप सब समष्टि रूप में हैं। आपमें से जो भी आदमी समष्टि से हटना चाहता है वह पहले जान ले कि वह cancer बन जाएगा और खत्म हो जाएगा। कोई बुरा नहीं है, आप में से कोई अच्छा नहीं है। यह अंगुली दुखती है इसको दबाइए, यह हाथ दुखता है इस हाथ से इसको दबाइए। आप सब आपस में जुड़े हुए हैं। आपको मालूम है आप सब आपस में जुड़े हैं। जब आप आपनी बाधाएँ share करते हैं तो आप अपना धर्म क्यों नहीं share करते? बाधा तो आप फट से पकड़ लेते हैं, धर्म क्यों नहीं पकड़ते? क्या वजह है? सारी वजह ये है कि अभी हम चढ़ रहे हैं। छोटे हैं, बड़े हो रहे हैं। छोटे बच्चे हैं, पहले थोड़ा जलेंगे, पहले थोड़ा गिरेंगे, एक दिन जब बड़े होंगे तो अपनी अंगुलियाँ पकड़ करके हजारों को चलाएँगे। छोटे हो अभी आप। ठगे जाआगे तो कोई हर्ज नहीं। भोलेपन में रहें। लेकिन जो ठग रहे हैं और वह अपने को बहुत अकलमन्द समझ रहे हैं तो उनको पता होना चाहिए कि cancer बन के निकाल दिए जाओगे। वह एक मार्ग और भी है जहाँ जो जाता है फिर लौटता नहीं है। नर्क का भी एक मार्ग है, उस रास्ते पर बहुत से लोग चलते हैं, उनको पता ही नहीं, वे सोचते हैं माताजी के सामने आओ, उनके पाँव छुओ, उनके पाँव धोओ। हो गये बड़े सन्त। वह भी एक मार्ग चल रहा है, साथ ही साथ सब चल रहा है। जब फूल खिलता है तो कली का जो कुछ गिरना है वह गिर जाता है और उसमें से सुगन्ध आती है। जो कुछ पनपने का है वह पनपता

है, जो गिरने का है वह गिरते जाता है। दोनों एक ही साथ चलता है। जीवन ऐसा ही पनपता है। जिसको झड़ने का है वह जीवन अपना ही उसको गिरा देगा। उसको मरने का है, खत्म करने का है वह कर देगा। लेकिन उसका भी storing time है, उसका storing का इन्तजाम है। वो भी जाते हैं, और कुछ कुछ तो ऐसे जाते हैं कि वहाँ से लौटकर नहीं आते। पशु योनी से मनुष्य बने और क्या फायदा है कि मनुष्य होने के बाद आप जाकर कीड़े बन गए? आप का competition सब धर्म में होगा। हम क्या धर्म में हैं या नहीं? अपने बारे में यह सोचें और दूसरों के बारे में यह सोचें कि वो कितना धर्म में है। हम कितने धर्म में हैं और वो कितने धर्म में हैं। और अगर वो अर्धम में हैं तो वो क्यों है? उसका कौन सा चक्र पकड़ा है? चक्र की पकड़ की वजह, उसमें कोई और बात नहीं है। निपेक्षिता से देखिए। सिर्फ चक्र पकड़ा है न। अरे निकाल देंगे चक्र उसका भी, अगर बैठे बैठे उसके प्रति सब इच्छा करते हैं। अगर बहुत ही गई बीती चीज़ है तो छोड़िए उसको, cancer हो गया। छोड़िये उसको, दफना दीजिए। लेकिन जिसके प्रति आपको सहानुभूति है, जिसका आपको लगता है कि वह ठीक होगा, उसका कुछ हाल ठीक कर सकते हैं, उसके आपके पास हैं तरीके। यह primrodial movements हैं, उनसे आप उनको ठीक करिए। आपस में share करिए, आपस के चक्र बढ़ाइए, बुरा नहीं मानिए। बिल्कुल भी नहीं बुरा मानना चाहिए। जिस आदमी ने बुरा मानना जाना है वह उतना ही गलत होगा जो दूसरे को दुःखी करता है। बुरा मानना और दुःखी करना दोनों ही एक चीज़ हैं, एक ही क्रिया के दो अंग हैं। इसलिए बिल्कुल भी बुरा नहीं मानना चाहिए। अगर कोई कहता है कि चक्र पकड़ा है तो उपकार मानना चाहिए भईया तूने

पहचाना, मैंने नहीं। अगर कोई कह दे कि तुम्हारे अन्दर में यहाँ से सॉप काट रहा है तो तुम उसका उपकार मानते हो। जिसका चक्र खराब हुआ है तो उसको भी उपकार मानना चाहिए कि यह मेरा चक्र पकड़ा है इसको निकाल दे भई, तू साफ कर दे। कभी बुरा नहीं मानना चाहिए। हालांकि और संसार से तो आप बड़े हैं ही क्योंकि आपकी vibrations हैं, और दुनियाँ में कितने लोगों को आ रही हैं। इतना बड़ा Pope है, उसके भी नहीं है। मैंने देखा है। बड़े बड़े लोगों से आप बड़े हैं लेकिन हैं तो अभी बच्चे ही न। सहजयोग में बच्चे हैं। Pope के पास तो है ही नहीं vibrations। बड़े बड़े जो बने हुए हैं, जिनके आगे दुनिया झुकती है और यह शंकराचार्य, और ये हैं, वो हैं, उनके किसी के vibrations हैं क्या, मालूम नहीं। और तुम लोग तो जागति भी देते हो और पार भी कराते हो। और सबकी कुण्डलिनियाँ अंगुलियों पर फिरा रहे हो। कितनी बड़ी बात है! गणेश जी के सिवाए कोई नहीं कर सकता था पहले। इसलिए गणेश जी के हाथ में वह होता है न छोटा सा साँप, वह इसका symbolic है कि वह सबकी कुण्डलिनी घुमाते थे। अब तुम्हारे कम से कम एक तो हाथ में आ गया है कि कुण्डलिनी तो चढ़ा सकते हो सबकी! पर लौकिक से बनता नहीं। वह अलौकिक है, उसका कुछ ठिकाना नहीं है। तोड़-फोड़ कर देता है। जितना वो नाजुक है, जितना वो प्रेममय है उतना ही वो संहारी है। वो तो अपने तरीके से चलने वाले हैं। आप अपने तरीके से सिर्फ इतना करिए। कहाँ है हृदय चक्र? सबसे पहले हृदय चक्र को ठीक करिए। हमारा हृदय साफ है या नहीं? हमारे मन में किसी के प्रति क्रोध है क्या? हमारे मन में किसी के प्रति कोई आशंका है क्या? अपने हृदय से पूछें। सबसे बड़ी चीज़ है क्योंकि हृदय control करता है brain को

और हृदय ही से सारा कार्य हम करते हैं और हृदय से ही सम्बन्ध है, तुम्हारा मेरा। इसलिए पहले हृदय चक्र को पूर्णतया आप लोग साफ करें। हम अपनी तरह से चीज़ सोचते हैं कि यह ऐसी चीज़ है। हृदय की तरह क्यों नहीं? कितना प्रेम हमने दिया? दूसरों को हमने कितना प्रेम दिया, दूसरों को कितनी तकलीफ दी। मुझे देसाई की चिट्ठी आई, उनके लिए लिखा उन्होंने कि मेरी wife की बड़े मदद करते हैं। मुझे बड़ी खुशी हुई, बाग बाग हो गई मेरी तबीयत यह सुन कर के। तेरे देसाई की बड़ी helpless चिट्ठी आई, मेरे wife को ऐसे हुआ। मैंने कहा, इतने लोगों को मैंने पार किया, यह दिया वो दिया, वो बेचारी मर कैसे रही है? मुझे क्या ज़रूरत है? London से उसे वहाँ vibrations भेजी। बात-बात पर आपस में मदद करें, आपस में प्रेम करें। ऐसे बन्धन में इक्कठे हो जाएंगे हम लोग कि जैसे एक ही शरीर है विराट का और उसके सहस्रार पे विराज मान हैं आप लोग, विराट के सहस्रार पर बिठाया है आप लोगों को और क्या कर रहे हैं पागल? विराट पुरुष के सहस्रार पे एक हजार आदमी बिठाने के हैं। और देखने को बड़ी बात लगती है। हाँ हाथ में vibrations कितने के आए हैं? आए हैं न? कुण्डलिनी को समझते हैं? उसमें तो कोई शंका नहीं आप लोगों को। हमारा क्या, खेती कर दी है, देखेंगे। सारी दुनिया के लोग करें। मुझे समझ नहीं आता कि तुम लोग छोटी छोटी चीज़ के लिए यह नहीं हुआ, वो नहीं हुआ? अरे, यह नहीं हुआ, वो नहीं हुआ, क्या होता है? तुम लोग कौन सी line में चले जा रहे हो और सोच क्या रहे हो? अब यहाँ से अगर आपको दिल्ली जाना है तो आप सोचिएगा कि वहाँ आटे का भाव क्या है? लेकिन आप को जाना है जहाँ आटा वाटा कुछ नहीं चलता। धर्म चलता है। वहाँ धर्म का भाव क्या है

यह जानना है। आटे दाल का भाव जानने की क्या जरूरत है धर्मिक लोगों को ? वहाँ क्या धर्म है, वहाँ क्या है, यह जानने की जगह वहाँ पर कौन सा politics पक रहा है? वह चीज़ है यह आप जानते हैं। अगर आपके अन्दर vibrations नहीं है तो बात अलग है। आप जानते हैं। लेकिन यह बहना बहुत ही कम चीज़ है, अभी तो कुछ हुआ ही नहीं, अभी तो बच्चे हैं आप। आपकी एक साल की भी साल गिरह मनाने को मैं तैयार नहीं हूँ। अभी तो सिर्फ़ ज़बरदस्ती का राम राम हुआ है। आप अपनी ओर देखिए कि मैं कुछ बदला कि नहीं, मुझमें कुछ अन्तर आया कि नहीं? मेरे अन्दर कुछ शान्ति आई कि नहीं? मेरे अन्दर कुछ हुआ? सिर्फ़ सुषुम्ना की जो अति सूक्ष्म नाड़ी है उसमें से खींचकर निकाला है हमने आपको। एक ही बारीक line पर बिल्कुल खींचा है, जो की कहना चाहिए कि बाल के बराबर है। सुषुम्ना खुद ही इतनी मोटी है, देखा जाए तो और वह एक के ऊपर एक चार परते हैं। लेकिन इसी vibrations से लोगों की तबीयत ठीक हो रही है। यह ठीक हो रहा है। एक आई थी Lady उसका तो चेहरा एकदम अलग दिखाई दिया। वह कहने लगी मेरा तो asthma एकदम ठीक हो गया है। यह कौन सी बड़ी बात है। वह ठीक हो गया, वह ठीक हो गया, ये कौन सी बड़ी बात है? इसमें रखा क्या है? cancer ठीक हो गया, इसमें कौन सी बड़ी बात है। यह तो होना ही था। घर में अगर बिजली जल गई तो दिखाई देने ही लगेगा। कम से कम। अगर बिजली जली तो जली, कि नहीं जली? कम से कम दिखाई तो देगी सब चीज़। उसमें कोई विशेष बात नहीं हुई। लेकिन बिजली जलने के कारण आपमें कौन सा ज्ञान आया, आपने कौन सा New dimension देखा, आपने कौन सी चीज़ नई करी। यह विशेषता है। हाँ, कैसा? चल

रहा है? Now you are growing younger and younger. I am worried about you. She is getting younger and younger. Isn't, है। जो बोलते हैं वह सर के अन्दर से जा रहा है? दिल के अन्दर से जा रहा है? दिल के अन्दर से जाना चाहिए। सर से जाएगा तो argument करेंगे। उसका dogma बनेगा। दिल से जाने दीजिए प्रकाश होगा। प्रेम का मजा उठाना है तो दिल से जाइये। हृदय चक्र को ही sacred heart कहते हैं। Christian लोग जो कहते हैं sacred heart वहीं हृदय चक्र है और उसमें भवानी का, दुर्गा का स्थान रखा हुआ है। और बहुत बड़ा स्थान है उसका। दुर्गा को समझना आपके बस का नहीं है। यह जितने भी राक्षस हैं वो भी उसी के बच्चे हैं। जो कुछ भी संसार है उसी का ही है। उनको जिन्होंने मारा, तुम्हारे प्यार के पीछे और उनका नाश किया वह उस माँ की ही शक्ति है। अपने ही हाथों को खींचना बहुत मुश्किल हो जाता है। अपने हाथ से अपने को injection देना बहुत मुश्किल हो जाता है, फिर अपने ही बच्चों को मारना दूसरे बच्चों को बचाने के लिए उससे भी कठिन बात है। लेकिन वह मारना भी एक बड़ी शक्ति का कार्य है। क्षमा का कार्य है, एक बहुत बड़ी क्षमा का कार्य है। लेकिन कलयुग में आप लोगों को कोई भवानी बनने की जरूरत नहीं है। शान्त हो जाइये। अत्यन्त शान्त हो जाइये। अत्यन्त शान्त हो जाइए। आपकी शान्ति ही हमारे कार्य को बढ़ाएगी। आप मान लीजिए की लोग कहेंगे सहजयोग में हमने ऐसे ऐसे लोग हमने देखे हैं कि जो क्रोध के बिल्कुल वो थे, servility के पुतले थे, बिल्कुल दबे हुए लोग थे। अजीब अभिनव वो आदमी थे। आप ही लोग हमारे सहारे हैं और कौन है? आप ही से लोग कहें बढ़िया आदमी है, first class. तबीयत का बड़ा है हर चीज़ से wide है। हो रहा है, काफी हो रहा

है। पहले से बहुत फर्क आ गया है। लेकिन जोरों में हो सकता है।

अब सब आपके ऊपर है। जैसे इसको सोचे, आपस में समझें, दूसरों की बात सुनें, शान्ति पूर्वक दूसरों को समझें, दूसरों को महसूस करें। तादात्म्य पाएं, दूसरों के साथ, जैसे यह हाथ इस हाथ को जानता है। इस हाथ से यह brain भी जानता है और हृदय भी जानता है, और सब चीज़ एक साथ चल रही है integrated, ऐसे ही आप सबको integrated होना पड़ेगा। तभी वह हजार हाथ तैयार होंगे जो मनुष्य रूपेण इस्तेमाल किए जाएंगे। वही हजार हाथ जो सहस्रार में हैं। वो मनुष्यों से ही निकलेंगे, वह भी सर्वसाधारण, कोई बड़े बड़े ऋषि मुनि नहीं चाहिए उसके लिए की बैठा लिए चक्रों पर। जो बड़े बड़े लोग हैं वह तो चक्रों पर बैठे हुए चला रहे हैं। सहस्रार में तो यह सामान्य मनुष्य से निकलने वाले हैं। marathi... हैं। घर में ही सफाई पहले। मैं कह कर रही हूँ कि आपस में नहलाना शुरू करो vibrations से। Mrs. Lal आप दीजिए, ये आपको दें। पहले चक्र आपस में देख लीजिए फिर बाहर निकलें नहा धोकर, बाहर निकलें, तैयार, फिर शरद मिलें, शरद की आपको सफाई किया। फिर उन्होंने आपके दो हाथ सफाई किये। सफाई करते चलिए, हो गया, सब, निर्मल हो गया मामला। दुनिया में सब आफत मची हुई है और दुनिया में आपको पता नहीं क्या क्या हो रहा है। criminality बिलकुल आने वाली है। आपको पता नहीं है राक्षसों का ऐसा राज्य बना हुआ है। और राक्षस लोग ऐसी बातचीत करते हैं कि उनका आपस में गुट हो जाता है। वे ऐसे चिपक जाते हैं आपस में जैसे कोई glue होता है ना। वो ऐसे चिपक जाते हैं। और हमारे जो कार्य करते हैं वो बात बात में झट गिर गये। उधर गये, झट गिर गये

क्योंकि स्वतन्त्रता नहीं है। और राक्षस लोगों को देखिए, उनके वो कैसे आपस में जुट करके—आ हा—हा! क्या मजा आ रहा है! इसका गला घोटा, उसको मार डाला, उसकी हालत खराब। सन्तों का गुट जब बनेगा तो सोचिए क्या होगा? सन्तों का गुट कभी बना नहीं है। यह पहली मरतबा हुआ है। सन्तों की सन्तता छूट जाएगी तो फायदा क्या ऐसे गुट का? सन्त के सारे ही लक्षण अपने अन्दर से दिखने चाहिए। marathi... मैं कह रही हूँ लाल साहब, कि आप लोगों की meeting थी, पहले वह कर लीजिए फिर पूजन करिए। क्योंकि जब चढ़ जाएगा न फिर हम कुछ बोल नहीं पाएंगे। आप लोगों की meeting में जो कार्यवाही होती है, कार्यवाही के लायक रह नहीं जाएंगे। हो गया। अब आप बता दीजिए कोई problem है क्या, बिलकुल सांसारिक gross सब कुछ बातचीत हो जाए। फिर पूजन करिए इत्मिनान से। यह जितना भी गोबर है उसको लपेट कर साफ करके फेंक आएंगे फिर बातचीत होगी। बताएँ क्या क्या problem है। अगर किसी में ज्यादा है तो आप उसकी मदद करके उसे ठीक कर सकते हैं। पर निपेक्षता रखिए। निपेक्षता आवश्यक है। आप आप नहीं है, आप निर्मल अन्दर हैं, बाहर आप हैं। ऐसा दूसरा कोई भी है उसका भी ऐसा ही है। आप निपेक्षता से दूसरे के प्रति जाग त रहें। अगर किसी में बहुत तकलीफ दिखाई देती है तो उसे ठीक करें। बुरा न मानें। अगर कोई आदमी बुरा मानता है तो इशारे से कहें। जैसे आप मेरे पैर पर हैं। किसी बात से आप बुरा माने समझ लीजिए मालूम है हमें, तो दूसरों को उसका कुछ सोचना नहीं चाहिए। जैसे कोई आदमी बीमार होता है उस तरह तो मैं आपको इशारों में बताऊंगी कि आप पैर पर आ गए। समझ गए कहाँ पर हैं चलो निकालो। आपस में मिलकर के

हम लोग आपस में सफाई करते हैं।

प्रश्न—माँ आपस में कोई भेद भाव दिखाई पड़ता नहीं है। उत्तर: है नहीं। लेकिन थोड़ा बहुत यह होता है हम लोग पाँच कदम आगे चले और छः कदम पीछे, फिर पाँच कदम आगे फिर छः कदम पीछे। सवाल उठता है कि कितने साल बाद पहुंचेंगे? वे पहुंचेंगे ही नहीं वह तो उधर ही खड़े हैं। प्रश्न: उठते तो हैं लेकिन अखिर जो नतीजा है उसमें भेद भाव नहीं बीच में पर पड़ता है। श्री माताजी: हूँ। वह भी चीज़ है जब आप अपनी awareness में उतरेंगे तो वह बिल्कुल एक साथ चलेंगे। एक साथ जैसे की इतना बड़ा समुद्र है उसकी भी लहर एक साथ चलेगी। एक साथ सबका आन्दोलन चलना चाहिए। अब यही है कि एक डण्डे से चाहे, अपने को मार लो चाहे दूसरों को मार लो, बेहतर है अपने को मारो। इसमें बड़ा छोटा कोई है ही नहीं, इसमें कोई seniority का सवाल है ही नहीं। इसका reason है न आप लोग लौकिकता से आ रहे हैं जहाँ आपने देखा कि एक बड़ा होता है एक छोटा होता है। एक officer होता है एक नीचे होता है, एक राजा होता है, एक कंगला होता है, एक साधु होता है, फिर एक सन्यासी होता है। इसमें कुछ नहीं है सिर्फ एक वह चला हुआ है। churning को क्या कहते हैं? मंथन है यह। मंथन चला हुआ है। एक ऊपर एक नीचे, बस मैं मंथन ही कर रही हूँ। अब मक्खन कौन चुराएगा वह देखना है। अकलमंद जो होगा वह मक्खन चुराएगा यह तो चला ही हुआ है churning. खूब, कभी ठण्डा आएगा कभी गर्म आएगा। यह चला हुआ है और मक्खन ऊपर आएगा, और तैर जाएगा मक्खन हल्केपन से। कोई ऊँचा नीचा है ही नहीं इसमें। जिसने सोचा कि मैं ऊँचा हूँ और नीचा हूँ तो फिर एक महमाया भी बैठी हुई है, समझ लीजिए। फिर

ऐसी कुण्डलिनी पकड़ के रखूंगी नीचे में कि देखूंगी कौन कौन बड़े है? कौन जो बड़े बड़े बातें करने वाले हैं। यह churning चला है जान बूझ करके हम कुण्डलिनी उतारेंगे, जान बूझ कर भी। बात यह है कि जब तक उतारेंगे नहीं, चढ़ाएंगे नहीं, उतारेंगे नहीं चढ़ाएंगे नहीं, तब तक काम नहीं बनेगा जानबूझ कर उतारेंगे। अभी जितने बूढ़े लोग हैं उन्हें पता होना चाहिए कि लौकिकता से आप ही लोग Leader हैं। लौकिकता से संसार में आप ही लोग बुजुर्ग हैं, आप ही बड़े हैं। इसलिए आपको और भी Better होना चाहिए। आप लोग सब एक हो जाएं। बच्चों को बताएँ, बच्चे हैं आपके, कि यह लौकिकता है। और अलौकिकता में कोई भी उठ जावे, जिसकी दृष्टि ऊपर में है जो पहली सीढ़ी में भी खड़ा है तो भी वह चढ़ जाएगा। उतरा तो भी वह बार बार चढ़ जाएगा। जो सोच रहा है कि मैं ही बड़ी ऊँची सीढ़ी पर हूँ, गलत है। अन्दर में उसको सोचना चाहिए और देखना चाहिए कि हम चढ़े और उतरे, चढ़े और उतरे। सबका होता है। क्योंकि मंथन चला हुआ है। मंथन में किसी का कोई स्थान नहीं बना हुआ, यह हिसाब है। सहजयोग का तरीका बिल्कुल अभिनव है, नावीण्यपूर्ण है। आज तक किसी ने किया नहीं है और न कभी मंथन हुआ है। एक आदमी, गगनगढ़ महाराज सालों तक बेचारे तपस्या करते हुए जंगल में बैठे रहे। उनसे आप लोगों का कोई लेन देन नहीं है। इस मामले में कुछ और आपको समझा नहीं सकूंगी। वह उनका मंथन नहीं हुआ। उन्होंने अपने दम पर अपने को बनाया है। अकेले ने। उनकी बात और है। उनका guidance यह है कि जैसे की गणेश जी की guidance है। आपके पास माथा पीटते हैं बहुत बार, भई इनको कैसे समझायें। तुम गणेश हो। यह गणेश नहीं है, बच्चे हैं। सोचो तुम गणेश हो, बहुत बड़े हो माना, लेकिन यह बच्चे हैं



अभी। और हमारे मंथन में फँसे हुए हैं बेचारे। उनके बीच का जुआ हम ही हैं। और समझा रहे हैं आपको। एक बात सही है, चाहे व शंकराचार्य हो या कोई, vibration के बारे में, इतनी बड़ी बात कोई भी नहीं जानता था। इतनी technicalities, primordial movements, सारे कोई नहीं जानता था, चाहे आप शंकराचार्य पर डालिए या कोई और पर डालिए। कहीं भी नहीं लिखा है। पर यही बड़े बड़े जीव आए हैं संसार में। मैं आपसे बताती हूँ कि क्या जीव है एक एक! बाप रे बाप! दस बाहर साल से तैयारी हो रही है। तैयार हो जाएंगे अन्दर। तब तक आप लोग मेरे सब platform न तोड़ दीजिए, कुश्ती कर कर के। अगर मेरा platform ही तोड़ दिया तो मेरे बच्चे क्या करेंगे? संसार में इतना बड़ा खेल करने को आए हैं थोड़ा बहुत ठीक है। हूँ, organisation कैसा है कि सब चीज अपने आप सहज ही ठीक हो जाएगी। जब आपस में आन्दोलन

एक रहे आपस में। एक आदमी अगर ज्यादा बोले तो ठण्डे हो जाओ, ठण्डे हो जाओ, ठण्डे हो जाओ। ठण्डा आता है न। ठण्डा आना भी चाहिए। गर्म नहीं, ठण्डे हो जाओ। ठण्डापन, संजीदापन, ठण्डेपन को अन्दर आने दो। धर्म ठण्डा है, absolute zero पर, धर्म बसता है absolute zero पर। ठण्डा लोग हिमालय पर जाते थे इसी लिए। तुम्हें हिमालय की जरूरत नहीं है। आप लोग अपना airconditioner खोल दीजिए इसी वक्त। अपनी और सचेत रहें। अपने दोषों को देखें, चक्रों को देखें और दूसरों के चक्रों में मदद करें, secretly। पहले बाद में बताने की जरूरत नहीं है। secretly जब आप कर सकते हैं तो क्या है? रास्ते में चलते ही चलते जब जाग तियाँ हो रही हैं तो फिर क्या है? जितना secretly करेंगे उतना पवित्र होगा, उतना ही प्रेमपूर्वक होगा। बड़ा अच्छा लगता है कोई काम secretly करें।

ENGLISH TRANSLATION

(Hindi Talk)

In Kalyuga there is no greater method than Forgiveness. The larger the Power of Forgiveness the more powerful you will be. Forgive everyone. Only the one who is Big can forgive. What can a small minded person forgive?

I had said this morning to know the Dharma. Know the Dharma that is within you. You are standing in Dharma. The one who is standing in Dharma has such tremendous powers within. Know this Dharma. Aah! It is so beautiful, those who are standing in Dharma. The one who is standing on Adharma we do not have a competition with him. We are standing in Dharma. Our ways are different. The one who is standing in Dharma his method is different from the one who is standing in Adharma. The one who is standing in Dharma cannot have any accord with one who is standing in Adharma. We are having problems, discomforts but we are standing in our Dharma. It is the greatest thing. Know your Powers within which is only based on Dharma. And Dharma is nothing but Love. And if Love is everything then Forgiveness becomes its part. How much can a person commit atrocities by seeing our Love? How much evil can a person do, how much can another trouble you, upset you, let them. Everything will be washed away with Love. This is the only way in Kalyuga that works out. I can't understand any other way. If you think that there should be some old methods to use then it is not possible. There is only one reason which I have told you before and I am telling you again that there are no complete saints or sadhus in this world. In each sadhu they have sent one, one rakshasa. They must gone into your attention. Have you understood? If it is some sadhu then it's alright. Paritraya Sadhunam vinashaya cha duskritaam (for the redemption of the saints and the destruction of the devils). But if with the sadhu there is the devil sitting inside then he will have to be removed with a lot of love, isn't it? What a difficult work this is. You are standing in the saintly position and there is also the devil within. But if you are standing as a saint and there is a devil within you can remove it. But tell me how many pure souls are there in this world? It's a difference of degrees. And those who are going towards sainthood should collect saintliness. They should have nothing to do with those who are not saintly. They are unsaintly, thieves and bilanders! What comparison with them. They are thieves and we cannot be them, they cannot be us. It just cannot be. They are moving on another line and we moving on another line.

To rise in Dharma is the aim of Sahaja Yoga. There is no other aim. It is a straight calculation. Sahaja Yoga has nothing to do with any of these things. You have to be awakened in your own Dharma, you have you get your own light and to know yourself. Someone says," Mataji, what to do, my chakra is caught this way, this or that has happened. To move them this way or that are all primordial movements, which I am telling you. Adigati, Primordial Movements, Primordial. These have been made. But to make it flow in a pure manner....if there are mixed things within then when you move your hands then it is moving mixed.

Without forgiveness Purity cannot come within. When Purity will come then the Light of Dharma will be spread...Pure and Nirmal. Means the one who has Dharma will have to come into the Light. Will have to talk about it, speak about it. But he should note in his own behavior whether he is seeing Dharma or Adharma. If I had given you a lecture before realization it would have been very wrong because it is a conditioning and that is the reason that all psychologists have finished the dharma. They teach that whatever Dharma they teach don't do this , don't do that. So the mind gets conditioned. But now this will not happen. Now whatever you want from the mind you can do. There will be no conditioning at all. Because I have taken your chitta and put it between ego and super- ego. Dharma is rising by itself and you have done that. You have found its way And whatever worldly

things you have known...that it is like this or that in the world, with that you cannot measure the Divine. You cannot join the value of Divine with that. I am talking about Divine and you are joined to the worldly. The three dimensions of worldliness have finished. Those who want to move to the fourth dimension with seriousness and depth... I am talking about the fourth dimension... You cannot know the value of the Divine through worldly things.

What or how have we been troubled? Not at all troubled... I say that we are very comfortable. The way I have seen difficulties and seen people in terrible difficulties and you will not find their descriptions also. These are such super rascals and such descriptions I cant explain. But the state of society is much better now. And even your state is very good. But you must not deceive and cheat yourself. It is a straight calculation. Whatever you are doing with Sahaja Yoga you are doing with yourself.

Now this question arises many times in administration. Such a question arises that what should we do? Is this correct or not. But this is so easy, so easy that before taking any decision go into Thoughtlessness. Whatever decision comes in front do that. That can never be wrong. But the decision will be spontaneous in thoughtlessness. And if you took that decision in thought then it will be biased because your ego and super ego both will work in that. Whatever are your samskaras, or worldly things you have earned will be standing behind you. But if you do it in thoughtlessness then it will be an abhinav, Divine, a miracle. A miracle... So when I am talking about Divinity then whatever worldly created ideas.... Pre-conceived ideas of human beings cannot guide God. You must know that. He has His own standing and His own Being. If you desire that God becomes like you then it is similar to the one who sells God for four rupees and says I will place him there. You will reach that level. He will as He is give Light and you keep seeking your path. You must know your Dharma within. To know your Dharma is very necessary, as to what a beautiful thing has been placed in you. In this destructible body what an indestructible thing is flowing. Just like a confluence of the three rivers, Ganga, Saraswati and Yamuna. Its stream is flowing. You cannot know this thing with the destructible within, or that which is worldly. For a second go into thoughtlessness and when you take decisions.... you will take such decisions which is not in the likes of many....Dynamic! Absolutely Dynamic!! Then worry, fear, anger, servility, slavishness, inferiority and all complexes will all fall away. He will speak in his grandeur. He has his own humility. Because he is so gentle... so gentle and delicate, that it is impossible to know how he came in. Just like the moonlight came in.

So now that you have been chosen then your importance is very great. Now you maybe thinking that I am such an ordinary person, how come I have been chosen? The choosing will be among ordinary people only. And these very, very great people whom you see in this world who are highly awarded, they will all become missing links. It has always happened. In every stage of evolution this has happened you have seen. All those who were great mammoths, became over developed physically, they are all finished. They were missing links. Only the elephant got saved. In the same way those who were over-developed mentally they are now coming like the fox. And from those also there are much more developed. But from them the dog got saved. In the same way it is in the humans who will rise from the ordinary. This has always happened that it has risen from the ordinary. And the so called extraordinary who are the third dimension, they are not going to do anything. They will become the missing links in the evolution stage. People will not know them as they don't know that the chimpanzee was a missing link. In evolution only ordinary people will be chosen.

One has to be normal. All these big Sanyasis who are roaming are not going to reach anywhere, you will see. They will all go into the missing link. And these highly awarded... I have given realization to all these kings, secretaries, but to what avail? They are all sitting on their positions. Do they feel that why the light should be lit within us? They write to me that I am feeling great joy... Do they think of doing something about this? That we have got it and should share it? When you have a special place then you have to be special too. From this ordinary only will the extraordinary come out.

Only that will blossom. Slowly you yourself will understand that they all are extremely foolish; who can talk to them? They might be big doctors, so what? They are just sitting. They have done nothing of value.

Our position is very high. For this you cannot be educated. There can be no education that I am going to teach you ABCD. This is to be experienced with your daily experience. This morning I had told you something very great that in Sahaja Yoga you are a part of the whole, not of the individual, but the whole. Know this point. Gagangiri Maharaj is very great. At a much higher position than you people, let us assume. But for 21000 years he was just going around in circles, poor man. Where did it happen spontaneously. He took rebirths 21000 times, kept falling at the feet of God and lived in jungles then only did he get these vibrations. And now how come you are getting it so easily? Because this is a new world. It is a new thing. You are the parts of this body of the Virat. He was made a symbolic man. But you are all in the Collective. The one who wants to get out of the collective he must know that he will become cancer and be destroyed. None of you is good or bad. One finger pains and the other finger will press it. If this hand pains the other will press it. You are all joined together. You know that. When you can share your badhas, then why can't you share your wealth? You catch badhas immediately, but why not wealth? The entire reason is this that at the moment we are just walking. You are still very little children. We are going to burn ourselves, fall down a bit. One day when you grow up you will take the hands of thousands and make them walk. If you get cheated, doesn't matter. You are little. Come into innocence. But those who are cheating and thinking that they are very clever must know that they will be removed like cancer.

There is another way too, where the one who goes never returns. But there is also a way to hell. Lot of people walk on that way. They think that to come in front of Mataji, touch Her feet, wash Her feet means they are great Sahaja Yogis. This way is also moving alongside. When the flower blossoms then anything that has to fall off the bud falls out and breaks and the fragrance comes out of that. That which has to grow, grows; and that which has to fall, falls. They both move together. Life is like that. That which has to grow, life will make it and the one that has to die, life will finish it. But there is a time for its storing and they go too. And some go in such a way and they never return. From the animal state you become humans and what is the use that you become insects after the human birth. Your competition should be on Dharma. Are we in Dharma or not? Think like this for yourselves and about others think that how deep are they in Dharma. And if they are in Adharma then why are they so? What chakra of theirs is catching? Look at it without expectations. Its only a chakra catching? Then you can remove it by just sitting here by your desire. If he is a gone case then let it be. He has got cancer. Leave it. But the one whom you feel sympathies with and one whom you feel will become alright, can be improved, you have the ways. These are primordial movements and you can put them right with those. Share with each other. Increase each other's chakras. You should not feel bad at all. The one who feels bad he will be as wrong as the one who is troubling others. To feel bad and to trouble are the same; are the two parts of the same movement. So one should not feel bad at all. If someone says your chakra is catching you should be grateful to him that he could recognize it and you could not. If someone points out to you that a snake is biting, you are grateful to that person, so the one's whose chakra has been caught up should feel grateful that person that he has pointed it out and you can clean it. Never feel bad. You are so different from others because you have felt the vibrations. How many have felt it? You are greater than the big people. But as yet you are children. You are children in Sahaja Yoga. Pope doesn't have any vibrations. All these so called Great people, these Shankaracharyas, and all, no one knows what kind of vibrations they have. You people can give realization and take them beyond. And you are twirling the Kundalinis of people. What a great thing you are doing. Besides Ganesha no one else could do this before. That is why the snake which is in Shri Ganesha's hand is symbolic. With that he would twirl the Kundalinis of people. At least you have got one of the powers that you can raise the Kundalini of all. And still you are looking at the worldly. It is Divine, timeless. It has no location. It puts everything right. Just as much as it is delicate and loving that much it is destructive. It will move according to its way. You just move the way you have to.

First of all put your Heart Chakra right. Clean your heart. Is our heart clean or not? Do we have anger towards anyone? Do we have suspicion for another in our hearts? Check your heart. Heart is the greatest thing because the heart controls the brain, and it is from the heart that we do all work. Yours and My connection is with the heart only. So clean you heart chakra completely. On our part we think that a thing is like this Why the heart chakra? How much love have we given? How much did we trouble another? Mr Desai wrote to me that you have helped my wife so much. I was very Happy. Then Mr Desai wrote a very helpless letter about his wife. I said to so many people I have given so much and how has did she die? I sent her vibrations from London. You must help each other in every way. Love each other. We will all become one in this bandhan. We are one body of the Virata. And you people are sitting there on the Sahasrara of the Virat. I have made you sit on the Sahasrara of the Virat. And what madness are you doing! I have to make one thousand humans sit on the Sahasrara of the Virat Purusha. It looks like a big thing. By my saying this how many of you are feeling vibrations in your hand? You understand about the Kundalini, there is no doubt among any of you? What of Me, I have ploughed the land and will wait and watch.

I know everything. Whatever you do anywhere I know it. Nothing is hidden from me. Within you all there is a lot of mess. You should live in your Dharma, Peaceful and balanced. You have got a very big thing. Be satisfied. What is this making plans? What is this, like a stupid person. Other people may do this but you all? For little things...this is not done...that is not done. What is this? this is not done...that is not done....? In which direction are you going and thinking? You have to go to Delhi from here, and you think what is the price of flour there? But you have to go where no flour or anything works. Dharma works there so know the value of Dharma. What is the need for Dharmic people to know the price of lentils and flour? Or what politics is cooking there? You know it. If you did not feel vibrations then it is a different thing. This flowing of vibrations is very little. As yet you are babies. I am not ready to even celebrate one year of your birth so at this stage a Ram Ram (taking god's name) has been done forcefully. Look at yourselves. I am not going to tell you. 'Has any change come into me or not? Has peace come within me or not? Has any change come or not?' I have pulled you out from the very subtle nadi within the Sushumna. I have pulled you on a very line which is as fine as a strand of hair. The Sushumna itself is as wide as a strand of hair, and there are 4 layers on top of it. But it is through these vibrations that people are getting better. One lady came whose face looked different. She said her asthma got cured. What is so great that asthma got cured, cancer got cured! This is bound to happen. Whats so great about it? If you got electricity in your house then everything will become visible. If the electricity came in it brought light. What is so important about that? But by the light coming in what knowledge did you get? What new dimension did you see? What new thing did you do?

What I am saying, is it going through your head or your heart? If it goes through your head then there will be arguments. A dogma will be made of it. Let it go through the heart, there will be light. If you want to enjoy love then bring it to the heart. The heart chakra is what the Christians call the Sacred Heart. Within it is the place of Bhavani, Durga which is a very great place. It is not within you to understand Durga. That all the rakshasas are also Her children. The whole world is Hers. A mother's Shakti destroyed them for the sake of Her love for Her children. To pull one's own hands is very difficult. To give an injection to oneself with one's own hands is very difficult. So to kill one's own children to protect other children is even more difficult. But to kill is a very great act of the Shakti; a very great act of Forgiveness. That is Her power of Forgiveness but in Kalyuga there is no need for you people to become Bhavani. Just become peaceful. Very peaceful...very peaceful. Your peacefulness will take forward the work of Sahaja. You will see that people will say that in Sahaja Yoga we have seen such people who were so full of anger, who were statues of servility and completely suppressed, have become miraculously changed. You are your own advertisements. What other advertisement do you want? People should say what a man he is. He has such a large heart and is so wide in all aspects. It is happening. There is a lot of change from before. But it can be done with full force. It is now all upto you. Just as you understand, feel, listen to others, hear others peacefully. Feel others. You have got it en masse with others. Like this hand knows from the other hand; and from the

same hand the brain also knows; the heart also knows and all these are moving together integrated. In the same way you will have to integrate. Then only will the thousand hands be ready, which in human form will be used. The same thousands hands which have come out from the Sahasrara of the Virat will come out from human beings. And these humans will be very ordinary. No great Rishis or Munis are needed for this to make them sit on the chakras. All these big people are sitting on the chakras. Only the ordinary will come out from the Sahasrara.

I am saying that start bathing each other every morning in your own homes with vibrations. First check your chakras between yourselves and then go out after bathing. Keep on cleaning. Everything becomes pure.

There is such turmoil in the world. You have no idea as to what is going on. A criminality is about to come. There is such a rule of the rakshasas which you are not aware of. And the rakshasas speak in such a way that they have a great fraternity. They stick to each other like glue. And among us, the way they work that they fall in an instant. Another falls there! That too in freedom. The rakshasas have a great unity. What fun they are having by killing one and throttling another. When the group of saints will be made, then just think what can be! Saints have never had a group. This is the first time. But if the saints give up their sainthood then what is the use of such a group. All the qualities of a saint should shine through from you.

Now tell all your worldly and gross problems before. Then we will do the puja at leisure. Take all this questions' cow dung and throw it out. If someone has more faults then you can get together and put him right. But keep it without expectations. You are not you and the same with the other. So have no expectations and be awakened to another in that state. If someone has a lot of problems then put him right. But you should not feel bad. If someone feels bad then do it subtly. Treat him like who is sick. When you are coming to my feet then you can always tell by signaling. Each one will point out the same thing. So clear out the problem. We should all clear out each other together. There is no difference but it actually happens that one moves five steps ahead and then six steps behind. So the question is after how many years will they reach? Or will they ever reach? When you are in awareness then all will move in unison. Like the ocean is huge but its waves move together. The movement should move together.

Man : Please don't feel bad, may I say that I am neither here or there. In a small group this happens that they think that he is big, or he is small, his chakras are new, he has this badha and this or that. I listen to both...

Shri Mataji: Now it is like this, you have one stick. Either you hit yourself or hit another. Better that you hit yourself. There is no big or small. There is no seniority in this. There is a reason for this that you have come from the worldly. Where you see that one is big, one is small, one is officer, one is below, one is this or that, one is king. Then one is sadhu, one is sanyasi. This is nothing but a churning. One is up then down, up and then down. I am just churning and nothing else. But we have to see who steals the butter. This churning is going on. Sometimes the cold will come sometimes the heat will come. The butter will come on top. The butter will float as it has become light. There is no high or low in this. Look at Modi, where he is. I purposely pushed the Kundalini there. Did you see that? No one is big or small. The one who thinks that I am big, or small, then remember then there is the Mahamaya sitting there. I will catch hold of the Kundalini in a such that I will see who is superior or inferior. The ones who think they are very great will be out. I will deliberately make the Kundalini go down a few times. Because if I don't make it go down then raise it and again I make it go down, and again raise it then it will not work out. I will deliberately make it go down.

The man who is talking to Shri Mataji is an old man. So Shri Mataji says:

Old people will also have to be a little wiser. This is for all the old people. I too am included in this!! All the elderly people should know that in the worldly life you people are the leaders. You are the elders in the worldly way. So you all should be especially better. All of you become one. You should

tell the children in this worldly way. Like Mr Modi, he is a very great man no doubt. But he also goes down. But one thing I have noticed that in every letter he makes a confession. His attention is on himself all the time. That is why I am fond of him as he confesses as to his faults, that Ma you are right. Such a person will be able to climb the first ladder. He wants to go higher he will climb again and again. But the one who thinks I am on a very high ladder..... We should look within and think within and see that we are climbing and falling, climbing and falling. It happens to everyone, because a churning is going on. In the churning (manthan) there is no special position for anyone. The way of Sahaja Yoga is like a drama and is something that is new and never been tried before. No one has ever done it or such a churning has taken place. One Gagangiri Maharaj sat for years in the forests doing tapasya. His churning did not take place. He made himself on his own power all alone. His matter is different. Yes he got the guidance as Ganesha's guidance to you all. But who shakes his head many times. How to make him understand. You are Ganeshas. Infact you are babies. They are stuck in My churning, poor things. One thing is true, that whether he is Shankaracharya or someone else, but no one knew so much about vibrations, the technicalities, the primordial, the movements. Read Shankaracharya or others, where is it written? It is not written anywhere.

(Shri Mataji greets a little girl who just came and related a story about her granddaughter, Aradhana.)

These highly realized souls have come on this earth, who are amazing! They are all getting ready within the age of 10 or 12 years. But till then you people don't break my platform by wrestling among yourselves!! If this is done then will my children do then?! They have come to play a big game. Now a little bit is alright but no dance of destruction! The organization will become harmonious when this movement becomes one. If one man is speaking more then just cool down. Cool down! Cool down! You feel cool so become cool also. Not hot, just cool. Coolness...Seriousness.... I am cool, on absolute zero. Earlier one went to the Himalayas. Now there is no need for the Himalayas. You can all start your air-conditioners here. Be alert towards yourselves. Look at your own faults. Look at your own chakras and help the chakras of others secretly. There is no need to tell. You can move your hands secretly. When realisation is happening while walking on the road then what! The more secretly you do the more pure it will be. The more love-filled it will be. It feels very good when something gets done secretly. It is happening with the land. They are saying it is being done, it will be done in whatever way. For that one person should get after the land. Ring up Swami Sahib and phone him and find out about the land. They will do it. (The Sahaja Yogis discuss with Shri Mataji whom they have to meet for the land.)

I want a program in April and I wanted to talk about the incarnation of the Adi Shakti. But at this stage perhaps it is too early as yet people do not understand what the Adi Shakti is. This Dilip Kumar the cinema person has also got his realization as he knows my brother very well. My brother told me that he can ask Dilip and get the cinema people to help as well. So please tell me. If you want then the poetry on the Adi Shakti, different types, then we can quote them but I don't know how much people will have interest in this.... (one Sahaja Yogi suggests quoting Meerabai as she is very well known). If some lady comes who is made ready on this subject. Like Gopi Krishna (the dancer) who has many small children, or give it to some organization.. (the Sahaja Yogi says that for that one will have to prepare the song, then a list. It cant be done so fast) So I think, let's have a variety entertainment. Because the subject of Meerabai is of 'separation'. We are talking of 'union' (with Divine). So better than that is to have a variety entertainment. On the subject of the Adi Shakti every religion will come in. So for the variety entertainment there should be the subject of the Adi Shakti.

We should make 3 teams. One team to collect money, second team should see to it that the program is done properly and the third team should see to the expenses. There should be coordination. There should also see to the printing of a souvenir where the printing etc can be seen to. For the program arrangement get the musical minded sahaja yogis to see to it.....(the last part is just discussions).